पाठ-सूची

1.	राजर्षि भाग्यचन्द्र– कार्त्तामहाराज – बी. रघुमणि शर्मा	1
2.	भीखू भाई और शाह मस्तअली – बी. रघुमणि शर्मा	8
3.	स्वचालित गणक यंत्र (ए.टी.एम.) – एस. लोकेन्द्र शर्मा	13
4.	जॉन ऑफ आर्क – बी. रघुमणि शर्मा	18
5.	माधवी का हृदय परिवर्तन (डॉ. कमल के उपन्यास 'माधवी' का एक अंश) – इबोहल सिंह काङजम (अनुवादक)	22
6.	फ्लोरेंस नाइटेंगिल – बी. रघुमणि शर्मा	28
7.	भारत के राष्ट्रीय अधिचिह्न – एस. लोकेन्द्र शर्मा	35
8.	मिजोरम का सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन – बी. रघुमणि शर्मा	42
	मूल कर्तव्य	48
	राष्ट्रगान	49

पाठ–एक

राजर्षि भाग्यचन्द्र– कार्त्तामहाराज

– बी. रघुमणि शर्मा

ऐसा विश्वास है कि प्राचीन काल के राजा-महाराजाओं में एक अद्‌भुत दैव शक्ति निहित थी जिसके कारण राजा जो भी कार्य करते थे वे सही और सत्य समझकर सभी लोग मानते थे। इस मान्यता के आधार पर राजा कभी-कभी जो भी पसन्द आए वे सब करते थे और समयानुसार किया करते थे। अपने अद्‌भुत तथा विशेष कार्यों के कारण राजा को देवता जैसा समझा जाता था। हर राजा-महाराजा में विद्‌यमान ऐसे गुण राजा भाग्यचन्द्र में भी थे। ऐसे गुणों के कारण प्रजा राजा भाग्यचन्द्र पर बहुत निष्ठा रखती थी।

सन् 1765 को मोइरांग के राजा खेलै नुङ्नाङ् तेलहैबा ने अवा(वर्तमान म्यान्मार) के राजा की मदद से कार्त्ता के राज्य पर वार किया और लोगों को सताना शुरू किया। कार्त्ता महाराज काछाड़ में शरण लेने के लिए पर्वतीय मार्ग से आए। जब

वे कोहिमा पहुँचे तब पहाड़ी निवासियों ने शत्रु समझकर कार्त्ता महाराज को आगे जाने से रोका। महाराज ने अपनी सच्चाई बताई तो भी वे मान नहीं रहे थे। उन लोगों ने सच्चाई जानने के लिए महाराज से ढाल और भाले से संकीर्ण पर्वत पर युद्ध-कला- नृत्य दिखाने को कहा। महाराज को तुरन्त समझ गया कि उन्होंने अपनी जान जोखिम में डाल दी। कार्त्ता महाराज इन सब में नहीं घबराते थे। महाराज ने भाला युद्ध-कला- नृत्य किया तो कठोर पत्थर भी गिली मिट्टी की तरह मुलायम और नरम हो गया जिसपर महाराजा भाग्यचन्द्र ने सम्पूर्ण युद्ध-कला दिखाई। उसे देखकर उन लोगों को पूरे विश्वास हो गया कि वह एक साधारण पुरुष या हमारा शत्रु तो नहीं होगा। वह मणिपुर का सच्चा और परोपकारी राजा होगा। वहाँ के लोगों ने राजा को अपने मंजिल तक जाने के रास्ते में बहुत दूर तक पहुँचाया। इसके बाद महाराज तेखाउ पहुँचे और तेखाउ राजा के शरण में रहे। यह खबर खेलै नुङ्नाङ् तेलहैबा के कान तक पहुँची। खेलै नुङ्नाङ् तेलहैबा ने अवा के राजा के साथ षडयंत्र करके तेखाउ के राजा से मैतै राजा को मार डालने के लिए खबर भेजी। तेखाउ का राजा उधेड़बुन में पड़ गया। अन्तमें उसने अपने भड़कैल और खतरनाक हाथी को पकड़वाकर मणिपुर के महाराज कार्त्ता की वीरता तथा सत्यता की परीक्षा लेने का आदेश दिया। इस आदेश को सुनते ही कार्त्ता महाराज के दुख की सीमा न रही। राजा कार्त्ता भक्त तो ठहरे ही। उन्होंने भगवान श्री कृष्ण को अपने मन में स्मरण कर चुपचाप ईश्वर की आराधना की।

भड़कैल हाथी को पकड़ने की पहली रात से कार्त्ता महाराज भगवान श्री कृष्ण को मन में स्मरण कर बहुत रोए। उनको रात में निद्रा नहीं आई; अन्त में भगवान का स्मरण करते-करते अचानक उनको नींद लगी। कार्त्ता महाराज शय्या पर लेटते ही थे कि स्वप्न में भगवान श्री कृष्ण ने उन्हें दर्शन दिया और साथ ही आश्वासन दिया –'' कार्त्ता महाराज, घबराना नहीं, मैं तुम्हारे साथ हूँ। किसी से डरो मत। जब तुम जीत कर मणिपुर पुन: पहुँचोगे तब मेरा स्मरण करना मत भूलना। और एक बात याद रखना कि मैं कटहल के पेड़ के रूप में काइना पर्वत पर पदार्पण करूँगा; उस पेड़ से मेरा रूप जो आज मैं तुम्हें

दर्शन दे रहा हूँ, निर्माण करा कर निरूपण करो।'' ऐसा कहकर भगवान अंतर्धान हो गया। महाराज कार्त्ता फिर शयन नहीं कर पाए, रात भर उस मनमोहक मूर्ति के बारे में सोचते रहे।

अब मणिपुर के राजा कार्त्ता की कठिन परीक्षा का समय आ गया है। सूर्य निकलने से पूर्व कार्त्ता महाराज स्नान, तिलक धारण, भजनादि समाप्त कर भाग्य निर्णय के क्षण का इन्तजार कर रहे थे। उधर वह मैदान जहाँ भयानक हाथी छोड़ा जा रहा था, अच्छी तरह से घेराबन्दी कर दी गई। चारों तरफ मनुष्यों का सागर उमड़ रहा था। राजा, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा मुख्य जनों के लिए मचान बनाए गए और सब लोग वहाँ इकट्ठे कर उस भड़कैल हाथी से मणिपुर के महाराज को कुचलवा कर मारने का तमाशा देखने के लिए प्रतिक्षा कर रहे थे।

समय आने पर भक्त राजा कार्त्ता हाथ में चामर लिए श्री हरि को अपने मन में स्मरण कर घेरे के अन्दर प्रविष्ट हुए। जिसपर भगवान साथ देता है तो इस संसार में उसके लिए कोई अनहोनी नहीं थी। महाराज को देखते ही वह भयानक हाथी जोर की आवाज से गरजने लगा। उस आवाज को सुनकर दर्शकगण ठंडी साँस लेने लगे। जब हाथी राजा

पर प्रहार करने के लिए आगे बढ़ा तब अचानक भगवान श्रीहरि ने प्रत्यक्ष रूप न दिखाकर अपनी गंध दे दी। भगवान के आने का संकेत पाते ही सेवक महाराज ने चामर चला कर उनकी सेवा की। श्री हरि के अंग-गंध पाते ही भयानक हाथी नरम हो गया और महाराज के सामने घुटने टेक दिया। कार्त्ता महाराज के सामने श्री हरि प्रकट हुआ। दर्शकगण भगवान की उस मनोहर मूर्ति कों देख नहीं पाते थे। श्री हरि के संकेत पर महाराज हाथी के ऊपर चढ़ गए। दर्शकगण अत्यन्त चकित हुए। उन्होंने ऐसा विश्वास किया कि मणिपुरी राजा ने भयानक हाथी को आसानी से अपने नियंत्रण में रखकर पकड़ा है। भगवान अपने सेवक की दुख-दशा का निवारण कर अन्तर्ध्यान हो गया। राजा ने हाथी को पकड़ा, ऐसा ही वहाँ उपस्थित लोगों ने देखा। भगवान की अद्‌भुत लीला और महाराज पर किए कृपा किसी को मालूम नहीं था। तेखाउ राजा ने कात्ता महाराज की खूब प्रशंसा की और उसने महाराज को 'भाग्यचन्द्र' के नाम से सम्बोधित किया जिसका पर्याय है भाग्य में चन्द्रोदय।

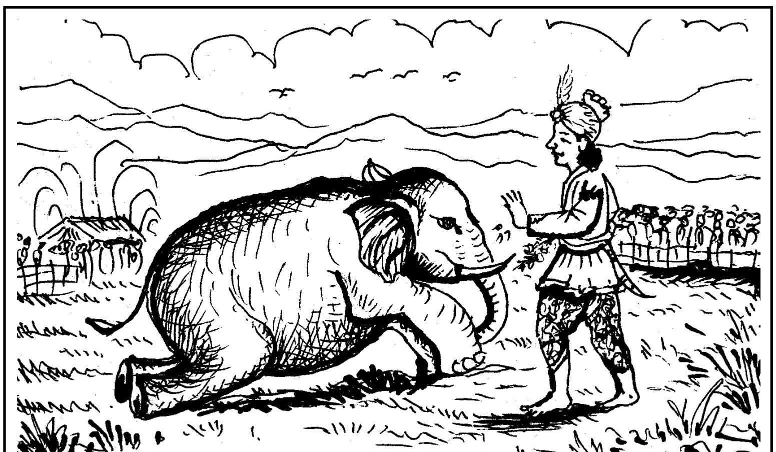

तेखाउ के राजा ने कार्त्ता महाराज की हर संभव सहायता करने की कसम खाई। मणिपुर के लोगों के मानसिक विचार और हाव-भाव देखने के लिए कार्त्ता महाराज राजकीय पोशाक त्याग कर पहाड़ी वेश-भूषा में गुप्त रूप से पहाड़ी मार्ग पर मणिपुर

आए। वे लाइमतोन फौरुङ्बा होते हुए खौपुम पहुँचे। भूखे और थके-माँदे खौपुम पहुँचने पर उन्होंने वहाँ के लोगों से खाने के लिए कुछ अन्न माँगा, लेकिन वहाँ के निवासियों ने नहीं होने का बहाना करके उन्हें अन्न का एक दाना तक नहीं दिया। महाराज का मन दुख और क्लेश से भर गया। इस अनुचित व्यवहार से दुखित महाराज ने एक अभिशाप देकर लोगों को विदा किया कि इस बस्ती के खेतों में लगे सभी धान कभी भी न पके। कहा जाता है कि उनके अभिशाप से आज तक उस बस्ती का धान कभी नहीं पका। इसके बाद वे नुङ्जाइबान कबोकचाइबी पहुँचे। ईश्वर की लीला कौन जाने, उनके मन में एक विचार आया और ईश्वर का साक्षी रखकर कहा – 'यदि नुङ्जाइबान पर्वत की ढलाई पर स्थित एक पत्थर पर भाला युद्ध नृत्य-कला का अभ्यास कर पत्थर पर अपना पद-चिहन् अंकित कर सकूँ तो राज-सिंहासन की पुन: प्राप्ति करने का साक्षी होगा अन्यथा असंभव हो जावे।' ऐसा कहकर उन्होंने पत्थर पर भाला-नृत्य किया। पत्थर पर पद-चिह्न का निशान लग गया। ऐसा कहा जाता है कि अभी तक वह चिह्न वाला पत्थर मौजूद है।

भाग्यचन्द्र महाराज पर्वतीय रास्ते से होकर लमाङदोङ् पहुँचे। वहाँ गुप्त रूपमें रहकर उन्होंने फ़ौज इकट्ठी की और तेखाउ के राजा के पास सारा वृत्तान्त बताकर चढ़ाई की तैयारी की। तेखाउ-राजा ने भी उचित फौज भेज दी। उसी समय मणिपुर में अवा की सहायता से खेलैनुङ्नाङ् तेलहैबा शासन कर रहा था। तेखाउ राजा की सहायता से महाराज भाग्यचन्द्र ने युद्ध में खेलैनुङ्नाङ् को मारकर मणिपुर का राजसिंहासन फिर से प्राप्त किया। उन्हें इस प्रकार मणिपुर के राजसिंहासन पर विराजने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी खुशी में दोनों राजाओं के बीच स्नेह संबंध स्थापित करने के लिए महाराज ने अपने प्रिय अग्रज गौरश्याम की सुपुत्री कुरङ्गनयनी को तेखाउ राजा के साथ विवाह सम्पन्न किया।

सन् 1798 में मुर्शिदाबाद में राजा भाग्यचन्द्र ने अपने जीवन की अन्तिम सांस ली।

कठिन शब्दों के अर्थ–

अद्भुत	=	आश्चर्यजनक।
निष्ठा	=	दृढ़ निश्चय, श्रद्धा और भक्ति।
ढाल	=	तलवार, भाला आदि के आधात को रोकने का लोहे या चमड़ेका बना कछुए की पीठ जैसा एक साधन।
संकीर्ण	=	तंग, सँकरा।
परोपकारी	=	भलाई करनेवाला।
मंजिल	=	पड़ाव, मुकाम।
षडयंत्र करके	=	साजिश करके , दूरभिसंधी करके।
उधेड़-बुन	=	निरन्तर विचार, ऊहापोह, तर्क-वितर्क।
भड़कैल	=	भयानक, जंगली पन।
खतरनाक	=	खतरे से भरा हुआ।
आश्वासन	=	दिलासा देना, आशा दिलाना।
अंतर्ध्यान हो गया	=	लोप हो गया।
वर्तमान	=	विद्यमान।
घेराबन्दी	=	घेरा डालने की क्रिया।
मचान	=	खेत की रखवाली या शिकार के लिए बाँस आदि की सहायता से बनाया गया ऊँचा आसन।
प्रविष्ट हुए	=	प्रवेश हुए।
ठंडी साँस लेने लगी	=	आह भरने लगी।
निवारण कर	=	दूर कर, रोक कर।
अग्रज	=	बड़ा भाई।

प्रश्न-अभ्यास

1. प्राचीन काल से प्रचलित नियमानुसार प्रजा का राजा के प्रति रखी निष्ठा कैसी थी? उसके आधार पर राजर्षि भाग्यचन्द्र की स्थिति स्पष्ट कीजिए।
2. कोहिमा के निवासियों ने कार्त्ता महाराज की सत्यता की पहचान कैसे की ?
3. कार्त्ता महाराज ने मणिपुर से भागकर कहाँ शरण ली और वहाँ उनको क्या-क्या संकट हुआ ?
4. कार्त्ता महाराजा का नाम 'भाग्यचन्द्र' कैसे पड़ा? इससे संबंधित कथा को संक्षेप में लिखिए।
5. तेखाउ में कार्त्ता महाराजा ने जिन संकटों को सामना किया, उनका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
6. कुरङ्गनयनी किसकी पुत्री थी ? उसका विवाह किसके साथ हुआ और उस विवाह का क्या मर्म रहा ?
7. राजर्षि भाग्यचन्द्र पाठ का सारांश लिखिए।
8. आजकल मणिपुर में लोग राजर्षि भाग्यचन्द्र के वंश को किस नाम से जाने जाते हैं? राजर्षि भाग्यचन्द्र के पूर्वजों के नाम अपने गुरुजनों से जानकारी करके लिखिए।
9. महाराजा भाग्यचन्द्र की जीवनी दूसरी पुस्तकों के से पढ़िए और उनकी बेटी राजकुमारी बिम्बावती के बारे में दस वाक्य लिखिए।

* * * * *

पाठ–दो

भीखू भाई और शाह मस्तअली

– बी. रघुमणि शर्मा

शाह मस्तअली एक पहुँचे हुए फकीर का नाम था। हिन्दू और मुसलमान दोनों उनपर अटूट श्रद्धा रखते थे। उसका मज़ार जयसिंहपुर नामक कस्बे में बना हुआ है। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले उनके मज़ार पर मेला लगा करता था। आजकल वह मेला भीखे शाह के नाम पर लगा हुआ है।

शाह मस्तअली एक पहुँचा हुआ फकीर था। भीखू शाह मस्तअली का चेला था। हिन्दू-मुसलमान दोनों उनको श्रद्धा से देखते थे और मानते थे। उनका विश्वास था कि शाह का आशीर्वाद कभी बेकार नहीं होता। उसके चेला होने के नाते भीखू भी अपने गुरु की तरह बराबर सम्मान मिलता था। भीखू बचपन से ही भक्ति-भाव में दिलचस्पी लेता था। एक पहुँचे हुए फ़कीर को अपने गुरु के रूप में पाना भीखू अपने आपको सौभाग्य समझता था। गुरु की सेवा-सुश्रूषा से फुर्सत मिलते ही प्रभु-भजन करना उसकी दिनचर्या थी।

भीखू पर सुख-दुख, मान-अपमान का कोई प्रभाव नहीं था। वह सब लोगों को समान दृष्टि से देखता था। एक दिन भीखू गाँव में भीख माँगता जा रहा था। वहाँ गाँव के कुछ लोग एक शव लिए जा रहे थे।

भीखू ने उन लोगों से पूछा – “ आप लोग क्या ले जा रहे हैं ?”

लोगों ने उत्तर दिया – “ दाह-संस्कार के लिए एक शव लिए जा रहे हैं ।”

लोगों की बात भीखू की समझ में नहीं आई। उसने गाँव वालों से ठीक-ठीक समझाने के लिए कहा। ''

लोगों ने फिर बताया – '' इसकी मृत्यु हो गई है; इसलिए इसे जलाने के लिए ले जा रहे हैं।''

भीखू ने लाश को देखकर कहा – '' यह तो सब कुछ ठीक है। सब अंग मौजूद है।''

भीखू की इस पेचीदा बात का उत्तर देना गाँववालों के लिए बहुत कठिन लगा क्योंकि उसकी बात गाँववालों की समझ में नहीं आई।

खूब सोच-विचार कर लोगों ने कहा – '' यह शव हिलता-डुलता नहीं और बोलता भी नहीं ।''

भीखू ने मुर्दे को हिलाया-डुलाया और कहा – '' उठी, भई, उठो। कुछ बोलो; नहीं तो ये लोग तुमको मरा हुआ समझ कर जरूर जला देंगे।''

इस समय मुर्दा उठने लगा और बोल उठा। लोग आश्चर्य-चकित हुए, साथ ही डरे भी और आनन्द भी हुए। लोगों का रोना, खुशी और हँसी में बदल गया। यह खबर आस -पास के गाँवों में फैल गई और अपने गुरु शाह मस्तअली के कानों तक पहुँच गई। शाह मस्त अली ने बात की सच्चाई पर खूब छान-बीन की। बात सही निकली, तो शाह मस्तअली को आग बबूला हो गया। उन्होंने कहा – '' क्या मैंने उसे वह इल्म इसलिए सिखाया कि वह कुदरत के नियम के खिलाफ काम करना शुरू करे ? ऐसा क्यों किया उसने ? उसे ऐसा नहीं करना चाहिए।''

शाह मस्तअली ने भीखू को जान से मार डालने की क़सम खाई। भीखू को पता चल गया है कि अपने गुरु काफी नाराज थे। भीखू शर्म के मारे अपने गुरु से मिल न सका। वह बहुत दूर भाग गया। शाह जी भी उसका पीछा नहीं छोड़े, उसको ढूँढ़ते-ढूँढ़ते आए। थकान और प्यास के मारे भीखू ज्यादा कदम उठा नहीं सकता। दूसरा उपाय न सूझ कर उसने धरती माता से निवेदन किया – '' माते ! मुझे आश्रय देकर अपनी गोद में समा लीजिए।''

भीखू के मुँह से यह शब्द निकलते ही धरती माता भी शीघ्र फट गई और भीखू उसमें समा गया। भीखू शाह मस्तअली का चेला था। इसलिए मुसलमान लोगों ने उसके शरीर को जमीन में दफनाना चाहा। हिन्दू लोगों ने उसका शरीर जलाना चाहा। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि भीखू का शरीर न हिन्दू को मिला, न मुसलमान को; उसका शरीर धरती की गोद में समा गया।

कठिन शब्दों के अर्थ–

फ़कीर	=	महात्मा, संत, साधु।
मज़ार	=	पीर या फकीर का कब्र।
कस्बे में	=	छोटे शहर में।
चेला	=	शिष्य।
दिलचस्पी	=	शौक, मनोरंजकता।
दिनचर्या	=	नित्या किए जानेवाला काम।
शव	=	मृत शरीर।
मुर्दे को	=	शव को, लाश,को मृत शरीर को।
लाश	=	शव, मुर्दा, मृत शरीर।
पेचीदा	=	जटिल।
छान-बीन	=	जाँच-पड़ताल, छानने और बीनने की क्रिया।
आग-बबूला होना	=	बहुत अधिक क्रुद्ध होना।
इल्म	=	विद्या, जानकारी, ज्ञान।
कु दरत	=	ईश्वरीय शक्ति।

प्रश्न-अभ्यास

1. भीखू भाई कैसा आदमी था ? उसके चरित्रा में क्या-क्या गुण विद्मान थे ?
2. गाँव वाले क्यों चकित हुए ?
3. शाह मस्तअली भीखू भाई पर नाराज क्यों हुआ और उसने क्या प्रण किया ?
4. भीख भाई और शाह मस्तअली पाठ का सारांश लिखिए।
5. भीखू भाई की मृत्यु कैसी हुई ? क्या उसे जलाया गया या दफनाया गया ?
6. क्या भीखू भाई हिन्दू है या मुसलमान ?
7. भीखू भाई ने गाँवालों के सामने जो किया है, उसमें आपका क्या विचार है ?
8. क्या आप इस विचार में सहमत है कि भीखू भाई की मृत्यु अपने किए के अनुसार हुई थी ?
9. 'भीखू भाई पाठ एक लोग कथा है।' अपने अध्यापक से पूछ कर लोक कथा के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए'।
10. मणिपुर के प्रसिद्ध पाँच लोक कथाओं के नाम लिखिए।

* * * * *

पाठ–तीन

स्वचालित गणक यंत्र (ए.टी.एम.)

– एस. लोकेन्द्र शर्मा

बच्चो ! इस आधुनिक युग को विज्ञान के युग के नाम से जाने जाते हैं। आजकल संसार में विज्ञान की बहुत-सी अमूल्य देन हैं। लोग हर तरह से सम्पन्न होकर जी रहे हैं। फलस्वरूप आज हमारा जीवन विज्ञान की उपादेय चीजों से अधिकारपूर्वक शासन कर रहा है। संसार भर में विज्ञान की महिमा का विस्तार है। मनुष्य के जीवन के हर पहलू में विज्ञान का अनुदान बढ़ गया है जिससे मनुष्य को अपने जीवन काल में अपार आनन्द पाया है। विज्ञान ही ने जल, थल तथा आकाश पर विजय पा ली है। विज्ञान के आविष्कारों ने विश्व को कायापलट कर दिया है। आज विज्ञान ही विश्व-विजेता हो गया है।

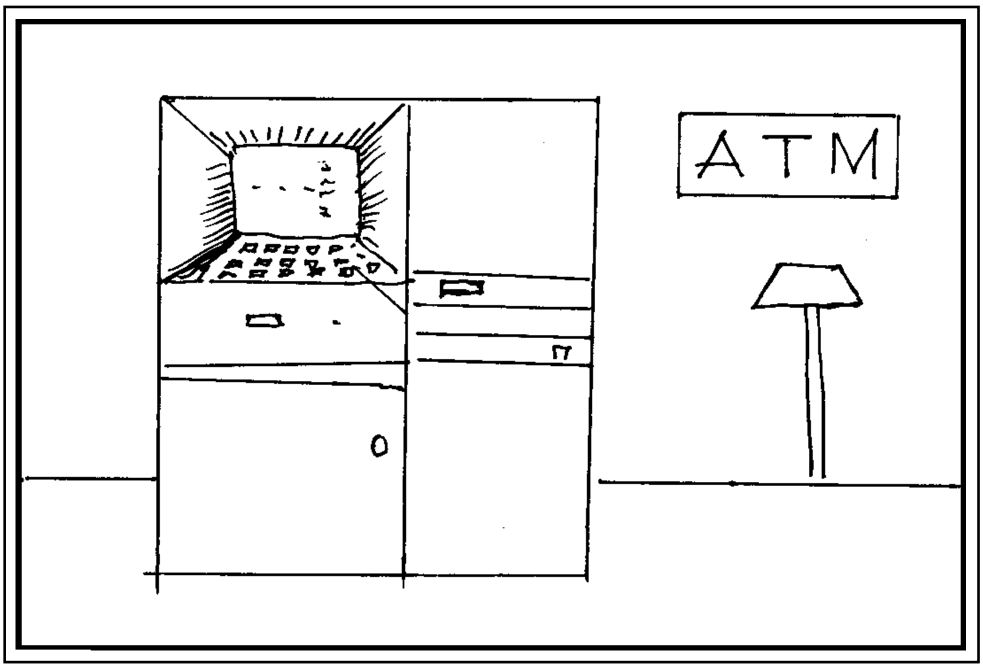

विज्ञान संसार में एक नया परिवर्तन लाता है और जीवन को रोचक और सजीव बनाता है। इसके प्रादुर्भाव होने से ही यह मानव का मित्र रहा है। यह जीवन में सुखी और प्रगतिशीलता देता है। विज्ञान मनुष्य को हानि तो देता ही है परन्तु इसके लाभ के सम्मुख हानि कुछ नहीं है। यह कहने में अत्युक्ति नहीं होगी कि विज्ञान के चमत्कार ने मनुष्य जाति का कल्याण किया है। आजकल विज्ञान के चमत्कारों में एक प्रमुख चमत्कार है 'स्वचालित गणक यंत्र' का अविष्कार। इसे अंग्रेजी में ए.टी.एम. अर्थात ऑटोमेटिक टेलर मशीन कहा जाता है।

स्वचालित गणक यंत्र जो आज हम देख रहे हैं और इस्तेमाल कर रहे हैं, इसके आविष्कार में कई साल और कई प्रक्रम लगे हुए हैं। स्वचालित गणक मंत्र का सर्व प्रथम आविष्कार सन् 1939 ई० में लुथर जर्ज सिमजियन नाम एक तुर्की आविष्कारक ने किया। जनता के नासमझ और कम प्रयोग के कारण उस यंत्र की गति रुक गई थी। अपने काम में प्रगति लाने का काम जारी करते हुए सन् 2000 ई० में उसका देहान्त हुआ। उसने लोगों के मन में स्वचालित गणक यंत्र का एक आभास दिया। सन् 1967 में जॉन सीफर्ड बैरोन ने भी एनफील्ड के बारक्लेज बैंक के एक शाखा में इस प्रकार के एक यंत्र का प्रयोग सफलता पूर्वक किया। संसार के अन्य देशों में भी इस यंत्र का इस्तेमाल शुरू किया गया। उसके कार्य-कौशल और सफलता की स्वीकृति में सन् 2005 में ब्रिटेन की महारानी एलीजाबेथ द्वितीय ने उन्हें ' ब्रीटिश साम्राज्य का आर्डर' देकर सम्मानित किया।

आम जनता के प्रयोग के लिए सर्वप्रथम स्वचालित गणक यंत्र अमेरिका के डॉन वेटजील ने 1949 ई० में न्यू-योर्क के केमिकल बैंक के रोकमाइल केन्द्र शाखा में रखा। उसका अनुसंधान जारी रहा; फलत: उसने चुम्बकीय पट्टी कार्ड और वैयक्तिक पहचान-संख्या वाला स्वचालित गणक यंत्र उत्पन्न कराया। इससे बैंक के काम में शीघ्र-गति और गलत-मुक्त होने में सहायक हो गया।

स्वचालित गणक यंत्र का बहुसंख्यक प्रयोग सन् 1970 ई. से शुरू किया गया। यंत्र बैंक के अन्दर या बाहर रखकर काम जारी किया गया। इस मशीन में ग्राहकों तथा

आम जनता की रुचि बढ़ गई। सन् 1971 ई० में उसने प्रथम मशीन से अधिक सुचारु मशीन लोगों के लिए तैयार किया। सन् 1970 ई० से तो यह यंत्र लोगों के दैनिक जीवन का एक प्रमुख अंग बन गया। आजकल हर जगह यह यंत्र दिखाई देता है। आज संसार में इस यंत्र के नामी विनिर्माता ट्राइटोन, एन.सी.आर और डायबोल्ड हैं।

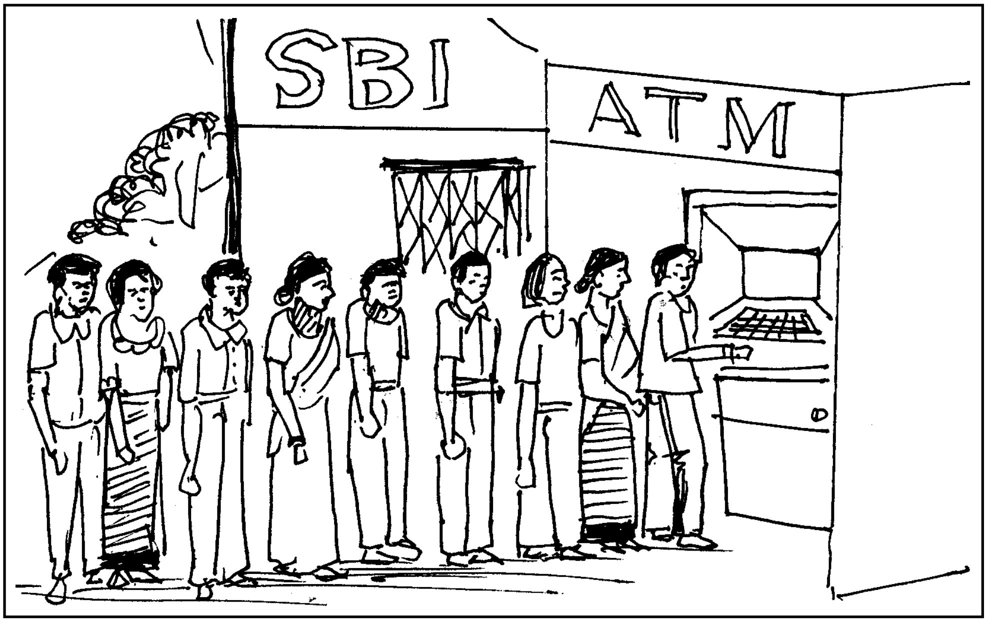

भारत में पहला स्वचालित गणक यंत्र का प्रयोग सन् 1987 ई० में मुम्बई में हुआ। संसार में सब से ऊँचा स्वचालित गणक यंत्र समुद्रतल से 13,200 फीट ऊँचे नाथुला पास में खुले यू.टी.आई. बैंक में रखा गया है। भारतीय स्टेट बैंक द्वारा केरल के समुद्रस्थल में रखा गया स्वचालित गणक यंत्र दुनिया का सब से पहला चलायमान यंत्र है। इस यंत्र का आविष्कार संसार में लोगों के लिए विज्ञान की एक अमूल्य देन है।

कठिन शब्दों के अर्थ–

काया-पलट	=	बहुत बड़ा परिवर्तन, पूर्णत रूपान्तरित करना, एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण करना
रोचन	=	मनोरंजक।
प्रादुर्भाव	=	प्रकट होना, उत्पत्ति, अस्तित्व ग्रहण, पनपना, विकास।
अत्युक्ति	=	बढ़ा-चढ़ा कर कही हुई बात।
कल्याण	=	मंगल, शुभ, सुख, सौभाग्य, भलाई, शुभ कर्म।
आविष्कार	=	नव निर्माण, खोजकर नया निर्माण करना।
प्रक्रम	=	क्रम, सिलसिला, आरंभ।
आविष्कारक	=	आविष्कार करनेवाला।
सुचारु	=	अत्यन्त सुन्दर, बहुत मनोहर।
चलायमान	=	जो चलता हो, चलनेवाला, अस्थिर, विचलित।

प्रश्न-अभ्यास

1. ए.टी.एम. का सम्पूर्ण अंग्रेजी शाब्दिक रूप और इसका हिन्दी रूपान्तर लिखिए।
2. ए.टी.एम का सर्वप्रथम आविष्कार किसने कब किया ? आम जनता के प्रयोग के लिए सर्व प्रथम यह मशीन कब और कहाँ रखा ?
3. ए. टी.एम. की उपयोगिता तथा सुविधाएँ क्या-क्या हैं ?

4. भारत में ए. टी. एम. मशीन का प्रथम प्रयोग कब और कहाँ हुआ ?

5. स्वचालित गणक यंत्र(ए.टी.एम.) के आविष्कार और विकास की गतिविधि संक्षेप में लिखिए।

6. विज्ञान की ऐसी पाँच आधुनिक देन के नाम लिखिए जो आज हमारे जीवन के हर पहलू में अनिवार्य होते हैं।

7. 'नाथुला पास ' का स्थापन जिला और राज्य के नाम सहित अध्यापक से पूछकर जानकारी प्राप्त कीजिए।

8. अपने माँ-बाप या भाई-बहन से पूछकर स्वचालित गणक यंत्र (ए.टी.एम.) के उपयोग के सोपानों को लगभग दस वाक्यों में लिखिए।

* * * * *

पाठ–चार

जॉन ऑफ आर्क

– बी. रघुमणि शर्मा

रणदेवी जॉन ऑफ आर्क का जन्म 6 जनवरी 1412 में फ्रान्स के तीरेन नामक प्रदेश के डुमरिन गाँव में हुआ था। उसकी माता इसाबेला एक धर्म परायण स्त्री थी। उस समय फ्रान्स की राजनैतिक तथा सामाजिक स्थिति बहुत खराब थी। फ्रांसीसियों में एकता नहीं थी। वहाँ का राजा चार्ल्स छठा इंग्लैण्ड के हाथ लगातार हार खाता रहा और इंग्लैण्ड के राजा हेनरी पंचम ने फ्रांसीसियो को हर संभव साधन से दबा रखा था। उन्होंने फ्रांसीसियों पर लगातार अत्याचार किया, महिलाओं का अपमान किया तथा गिरजाघरों में भ्रष्टाचार किया। उसे देखकर देवी जॉन असह्य होकर रो पड़ी।

एक दिन रणदेवी जॉन भेड़ चरा रही थी। इस समय अचानक उसने कहीं से एक आवाज सुनी – " जॉन अभी उठो। तुमको मातृभूमि बुला रही है। मातृभूमि को बचा लो।" उसने इधर-उधर देखा, लेकिन उसे कहीं कोई भी नजर नहीं आई। जॉन राजा डफिन की सहायता के लिए राजधानी चीनन् की तरफ रवानी हुई। चीनन् वहाँ से पाँच सौ मील दूर था। इतना लम्बा सफर अकेली लड़की के लिए खतरे से खाली न थी। उसको कई विपत्तियों का सामना करना पड़ा। दो सप्ताह के बाद वह डफिन की राजधानी पहुँच सकी। असली स्थिति न जानने से राजा डफिन ने गुप्त वेश में जॉन से मुलाकात की। जॉन ने राजा को आसानी से पहचान लिया। उसने घुटने टेक कर प्रणाम किया। राजा ने जॉन को रणनीति सिखाई। थोड़े ही दिनों में जॉन ने सारी बातें सीखीं।

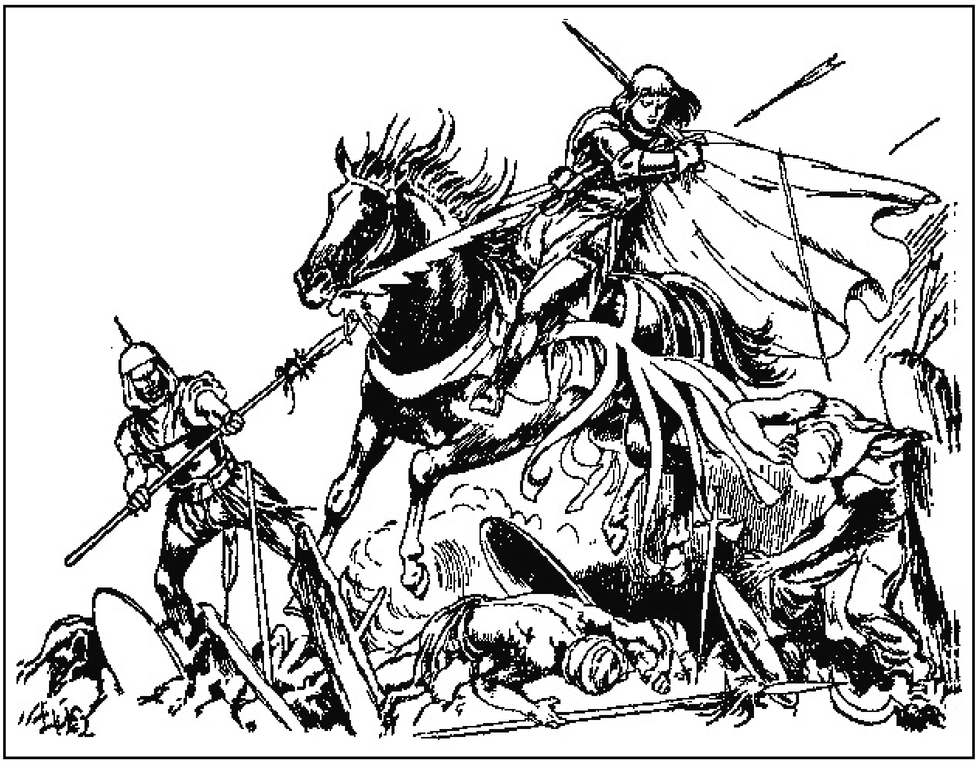

जॉन के आगमन से सारी फ़ौज को भी युद्ध की प्रेरणा मिली। रणदेवी जॉन 6 मई 1429 को युद्ध-भूमि में उतरी। उसके हाथ में विजय पताका फहरा रही। अंग्रेज

सैनिकों को हार पर हार मिली। अंग्रेजों ने जॉन को एक मामूली नारी समझा, लेकिन वह तो सचमुच रणदेवी की अवतार जैसी थी। उसने युद्ध में सेष्ट लुप, अरलिन्स शहर, पेठे आदि पर अधिकार प्राप्त किया। फ्रांसीसी राजा का राज्याभिषेक 16 जुलाई 1421 को सम्पन्न होनेवाला था। उस समय फ्रांससियों की राजधानी रीम्स तो दुश्मन के हाथों में था। देवी जॉन राजधानी रीम्स की ओर बढ़ने लगी। वहाँ घमासान युद्ध हुआ। अन्त में फ्रान्स की विजय हुई और इसकी पताका फहराई गई। राजा खुश हुआ और राज्याभिषेक भी बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

देवी जॉन ने घर वापस जाने की तैयारी की। लेकिन राजा ने उसे पेरिस विजय के लिए हुक्म दिया। जॉन ने 23 मई 1430 को कम्पियन नगर पर धावा किया। हर मनुष्य बराबर नहीं होता। मनुष्य का स्वभाव अलग-अलग होता है। सैनिकों के कुछ सरदारों ने साज़िश की। कुछ-देशद्रोही सिपाही अंग्रेजों से जा मिले। देवी जॉन उन देशद्रोहियों के हाथों पड़ गई। अंग्रेजों को खुश करने के लिए जॉन को 30 मई 1431 के दिन सभी के सामने जिन्दा जलाया गया। बाद में देशद्रोहियों के दिल पिघल गए और वे लोग अपने किए पर पछताने लगे। वे देशभक्त बन गए। उन्होंने एक साथ मिलकर अंग्रेजों को फ्रान्स से हमेशा के लिए भगा दिया।

कठिन शब्दों के अर्थ–

धर्म परायण = धर्म में विश्वास रखने वाला।

अत्याचार = अन्याय, जुल्म, दुराचार।

भ्रष्टाचार = आचारण भ्रष्ट, दुषित काम।

मामूली = साधारण।

राज्याभिषेक = राजगद्दी पर बैठने की रीति।

पताका = झंडा, ध्वजा, झंडी।

साजिश किया = षडयंत्र किया, कपट-प्रबन्ध किया।

प्रश्न-अभ्यास

1. जॉन कब और कहाँ जन्म हुई थी ? वह कैसी नारी थी ?
2. जॉन के समय फ्रान्स में हुई राजनैतिक स्थिति का चित्रण कीजिए।
3. जॉन राजा डफिन की राजधानी क्यों गई ? वहाँ पहुँच कर उसने क्या किया ?
4. 23 मई, 1430 को जॉन ने क्या किया ? उसकी मृत्यु कैसी हुई ?
5. पठित पाठ के आधार पर रणदेवी जॉन ऑफ आर्क की जीवनी संक्षेप में लिखिए।
6. जॉन ऑफ आर्क की जीवनी को पढ़कर आप के मन में कैसा भाव आता है ? उसे पाँच वाक्यों में लिखिए।
7. क्या आप देवी जॉन जैसी नारी बनना चाहती है ? क्यों ?
8. देवी जॉन की मृत्यु के संबंध में आपके सतर्क विचार पाँच वाक्यों में लिखिए।

* * * * *

पाठ–पाच

माधवी का हृदय परिवर्तन

(डॉ. कमल के उपन्यास ‘माधवी’ का एक अंश)

– अनुवादक: इबोहल सिंह काङ्जम (अनुवादक)

माधवी कई दिन से दिखाई नहीं पड़ी। पहले हमने उसे प्रेम से अपरिचित एक युवती के रूप में देखा था। सच में तो, वह ऐसी नहीं थी। ऐसा नहीं कि वह धीरेन् से प्रेम नहीं करती थी। वह प्रथम मिलन में ही अपना जीवन धीरेन् को समर्पित कर चुकी थी, फिर भी उसे युवकों के चंचल हृदय से बहुत घबराहत होती है। उसे ऐसा भी विश्वास था कि युवकों का प्रेम हृदय से नहीं, आँखों से उत्पन्न होता है। लड़कियाँ अपने स्वभाव के अनुसार मन में प्रेम अंकुरित होते हुए भी मुँह से यही कहती हैं कि वे प्रेम नहीं करती ; देखने की इच्छा होते हुए भी अनिच्छा प्रकट करती हैं, क्योंकि मुश्किल से प्राप्त वस्तुएँ बहुमूल्य होती हैं। इसलिए माधवी धीरेन् के सामने अपना उतना प्रेम प्रकट नहीं करती, जब कि अपने हृदय में उसने धीरेन् को कसकर बाँध रखा है। उसके पागल हृदय में प्रेम रोग प्रविष्ट हो गया है। जब निकट थे, तब दूरत्व था और दूर होने लगे तो सामीप्य की आकांक्षा होने लगी– शायद यही प्रेम की प्रकृति है। लम्बे अरसे तक धीरेन् से न मिल पाने की कल्पना से उसका दुख पहले से सौ गुना बढ़ गया– उसका प्रेम भी पहले की अपेक्षा सौ गुना बढ़ गया। परिहास में की गई उसकी सारी बातें अब विषैले सर्प की भाँति उसके मस्तिष्क में घुसकर काटने लगीं। माधवी ने सोचा, ‘‘ प्रेम का एक अलग संसार है, यदि कोई इस संसार में पदार्पण करता है, तो उसके लिए सभी बहुमूल्य वस्तुएँ मूल्यवान नहीं होतीं, सभी स्वादिष्ट भोज्य स्वादिष्ट नहीं होते – बल्कि जिससे वह प्रेम करता है, उसे सम्बन्धित वस्तु मूल्यहीन होते हुए भी मूल्यवान, अस्वादिष्ट होते हुए भी स्वदिष्ट, कुरूप होते हुए भी सुरूप

होती है। समझ गई हैं – यदि प्रेम किसी एक ही वस्तु पर केन्द्रित रहता है तो ढक्कनदार सन्दूक में बन्द रखने की भाँति बहुत पीड़ादायक होता है। अपना यह प्रेम किसी एक व्यक्ति पर केन्द्रित न रखकर, समस्त संसार में बिखेर सकूँ तो सारा दुःख मिट जाएगा। मुझे विश्वास नहीं होता कि इतने सारे दुःख को अपने हृदय में समेट कर मैं धीरेन् के आने तक जी सकूँगी। इस दुःख को मिटाने के लिए मैं हैबोक्-पर्वत की किसी कन्दरा में जाकर ईश्वर की आराधना करती रहूँगी, साथ ही संकट में पड़े यात्रियों की सहायता करूँगी।''

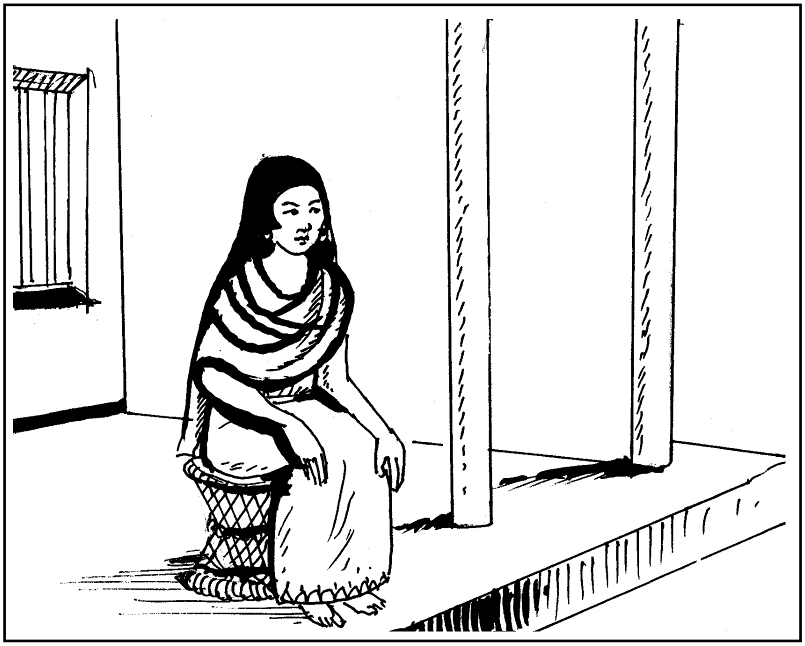

'' इस संसार में मनुष्य-जात में जन्म लेकर मात्र भरपेट भोजन करके और सुन्दर वस्त्र पहनकर जीना व्यर्थ है। परोपकार श्रेष्ठ कर्म है। इस श्रेष्ठ कर्म के लिए स्वार्थ त्याग करना पड़ता है, शर्म-हया त्यागनी चाहिए, दूसरों की शत्रुता से नहीं डरना चाहिए – लोगों की डाँट-फटकार को प्रशंसा मानना चाहिए, लोगों द्वारा अपनी पिटाई प्रेम से सहलाने के बराबर ही सोचनी चाहिए। हे ईश्वर ! अबला नारी-जात में जन्मी मुझे, समुद्र जैसे गम्भीर एवं उदार स्वार्थ त्याग की एक बूँद भर ले सकने की शक्ति दोगे ? समाज का कुछ लाभ करने का साहस प्रदान करोगे? हे दयामय ! तन से निर्बल, मन से भी निर्बल, अन्धविश्वास

के आवरण में लिपटकर जन्मी मुझे, अन्धविश्वास से ढके इस अन्धकारपूर्ण समाज को स्वार्थ त्याग का थोड़ा प्रकाश दिखाने की शक्ति दो।''

यह सब विचारते हुए माधवी ने मन-ही-मन अकेले हैबोक पर्वत की कन्दरा में भगवान की आराधना करने का संकल्प कर लिया। पहले वेश भूषा और अलंकरणों के बारे में मन को नियन्त्रित करना शुरू किया। युवती सुलभ-तड़क-भड़क की चाह त्याग कर गेरुए वस्त्र पहनने शुरू किए। उसके बाद खान-पान के बारे में अपने मन को नियन्त्रित किया। तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन त्याग कर सिर्फ चावल और नमक से पेट भरना शुरू किया। इस प्रकार पहाड़ी-कन्दरा में संन्यासिनी बनकर तपस्या करने लगी। सुनसान जगह होने के कारण डाकू अलग-थलग अकेले यात्रा करनेवाले यात्रियों का सामान लूट ले जाते थे। अब माधवी बाल बिखराए, जीभ फैलाए, हाथ में तलवार लिए चिल्लाते हुए दौड़ी चली आती थी। इस प्रकार उसने संकट में पड़े यात्रियों को डाकुओं से बचाया। उरीरै को बचानेवाली भी वही थी। उसके बाद 'हैबोक की देवी प्रकट होती है' 'हियाङ अथौबा निकलता है' आदि कहते हुए डाकू तक वहाँ जाने से कतराने लगे और उपद्रव भी घट गया।

धन्य है माधवी, तुम्हारी यह योजना! एक सौ आठ पँखुड़ियोंवाले कमल की भाँति कोमल अपने हृदय में वज्र जैसा कठोर यह स्वभाव भी छिपा रखा है। रुई के भीतर कीड़े का होना आश्चर्य की बात नहीं, सीप में मोती का होना आश्चर्य का विषय नहीं, काग पौधे के भीतर गाँठ का होना, मरुभूमि में मरुद्यान का होना, समुद्र की गहराई में पर्वत का होना असंभव नहीं, किन्तु अबोध, मानिनी, हठी और अपनी जन्मभूमि से कहीं बाहर न निकलनेवाली माधवी, तुम्हारी योजना और विचारधारा विस्मय भरी है।

मैतै जाति का दुर्भाग्य यह है कि स्वार्थ त्याग करनेवाले लोगों की संख्या बहुत ही कम है। स्वार्थ त्याग का ऊँचा और घने पतोंवाला वह अमर-औषध-वृक्ष देखना हो तो मणिपुर के ऊँचे पर्वतों पर चढ़कर बड़ी-बड़ी नदियोंवाली भारत की विस्तृत समतल भूमि पर दृष्टिपात करना होगा; तब देखोगे–अनेक बड़े वृक्षों का अपनी शाखाएँ फैलाकर अपनी छाँव में अनेक दीन-दुखियों को विश्राम कराना ! दाने-दाने को मोहताज दरिद्रों को अपने फल खिलाना ! आँधी और तूफ़ान को भी रोककर अपनी छाँव में लोगों को आश्रय देना ! अनेक वृक्ष निर्बल लोगों को अपने ऊपर बिठाकर चारों ओर की हलचल दिखाते हैं, कई वृक्ष समाज की सँकरी झील में डूबकर मरनेवाले लोगों को नाव बनकर शान्ति के विशाल समुद्र की ओर ले जाते हैं। मैतै की जमीन पर कहीं कोई बड़ा-सा वृक्ष उग भी जाए तो वह पर्वत से ऊँचा नहीं हो सकता और दूर समुद्र से आकर भारत की समतल भूमि पर बहनेवाली शीतल वायु मैतै की धरती तक नहीं पहुँच सकती।

कठिन शब्दों के अर्थ–

मिलन = मिलने का कार्य, मिलने की अवस्था।

समर्पित = अर्पित

अंकुरित = उत्पन्न।

कसकर = दृढ़ता से, मज़बूत से।

प्रविष्ट	=	प्रवेश, अन्दर पहुँचा हुआ।
आकांक्षा	=	चाह, इच्छा, अपेक्षा।
अरसे तक	=	समय तक, अवधि तक, देर तक, बहुत दिन तक, मैदान तक।
अपेक्षा	=	चाह, आदर, आधा, किसी की तुलना में।
परिहास	=	जोर की हंसी।
विषैले	=	जहरीला भाव।
कन्दरा	=	गुफा, घाटी।
परोपकार	=	दूसरों के हित का काम।
शर्म-हया	=	लज्जा।
आवरण	=	परदा, ढक्कन, आघात रोकनेवाली वस्तु।
कतराने	=	नजर बचाकर निकल जाना।
सीप	=	शंख, घोंघे, आदि की प्रजाति का एक जलचर प्राणी।

प्रश्न-अभ्यास

1. माधवी ने धीरेन के प्रति अपना प्रेम क्यों प्रकट नहीं किया ?
2. प्रेम के सम्बन्ध में माधवी के विचार स्पष्ट लिखिए।
3. माधवी के विचार में 'केन्द्रित प्रेम' क्या है ? उसने ईश्वर की आराधना करने का निर्णय क्यों लिया ?

4. किस पर लक्ष्य करके माधवी ने ईश्वर से शक्ति माँगी और क्यों ?
5. संन्यासिनी बनकर माधवी ने लोगों के लिए किए कार्योंको चित्रित कीजिए।
6. 'धन्य है माधवी, तुम्हारी यह योजना।'

   माधवी की योजना क्या है ? लेखक ने माधवी के क्या-क्या गुण व्यक्त किए हैं ?
7. माधवी के त्याग का वर्णन संक्षेप में लिखिए।
8. लेखक डॉ. कमल की जीवनी पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।
9. माधवी के किए कार्यों में आपके क्या विचार हैं ?
10. क्या आप इस पाठ को पढ़कर यह कह सकते हैं कि माधवी धीरेन से प्यार नहीं करती ?

* * * * *

पाठ–छह

फ्लोरेंस नाइटेंगिल

– बी. रघुमणि शर्मा

फ्लोरेंस नाइटेंगिल विश्व का एक गणनीय समाज सुधारक और समाज सेविका थी। उसका जन्म इटली के फ्लोरेंस नगर में 12 मई 1820 में हुआ था। इटली में उसके परिवार को नाइटेंगिल परिवार के नाम से जाने जाते थे। वह सुन्दर, बुद्धिमती और प्रतिभाशाली नारी थी। उसके गुणों की चर्चा हर जगह होती थी। लोग उसका नाम बड़े गौरव के साथ लिए जाते थे।

वैसे तो नाइटेंगिल साहब का एक सुन्दर भवन भी डर्बीशायर में था। इटली में आने के पहले वे डर्बीशायर(इंग्लैण्ड) में रहते थे। नाइटेंगिल साहब परिवार सहित इटली के फ्लोरेंस नगर में आकर रहने के बाद फ्लोरेंस का जन्म वहाँ हुआ था। धनवान तथा पढ़े-लिखे होने के कारण उनका परिवार समाज में बहुत सम्मान मिलता था। नाइटेंगिल साहब अपनी पुत्री को ऊँची शिक्षा प्राप्त कराकर एक विदुषी बनाना चाहते थे। लेकिन उस समय वहाँ स्कूल-कॉलेजों की व्यवस्था नहीं थी। परिस्थिति के अनुसार उसे घर में ही शिक्षा पानी पड़ी। इसलिए अपने पिताजी ने उसको घर में ही शिक्षा देने की व्यवस्था की। उसने घर में भाषा, संगीत और नृत्य-कला सीखी।

उसने छोटी उम्र में ही बच्चोंको बाइबिल की शिक्षा देना शुरू की। वह प्रकृति प्रेमी थी। उसका हृदय कोमल था, इसलिए दीन-दुखियों तथा रोगियों पर उसका काफी झुकाव रहा था। लोगों की सेवा में ही उसको सच्चा आनन्द मिलता था। वह वास्तव में धाय बनना चाहती थी। धाय बनकर रोगियों की सेवा करना ही उसकी पसन्दगी थी। लेकिन उस समय बड़े घरों की लड़कियों को बाहर जाकर काम करने का प्रचलन नहीं था। फ्लोरेंस के लिए तो यह चलनसार एक समस्या बनी रही। मगर अन्त में उसने अपने माँ-बाप के प्रति अपनी इच्छा प्रकट की। फ्लोरेंस के पिता नाइटेंगिल अपनी पुत्री के लिए सब कुछ करने को तैयार थे, परन्तु अपनी पुत्री का धात्री बनना और बाहर जाकर काम करना; ये दो बातें उनके लिए असह्य और अपमान होती थीं। इसलिए उन्होंने अपनी बेटी की इच्छा पूरी करने नहीं दी। इसी कारण फ्लोरेंस का जीवन दुख भरा हुआ था। बहुत समय तक वह अनेक दुख झेलती रही। उसको समाज में प्रचलित कुप्रथा से अच्छी तरह ऊब गई। वह समझती थी कि उसकी धात्री बनने की इच्छा आसानी से पूरी कर नहीं पाएगी। अत: उसने सब दुख चुपचाप सहकर मौके का इन्तजार किया। रह-रहकर कभी-कभी वह नाच-गान आदि कार्यक्रमों में बिना इच्छा के भाग लेती थी। समय-समय पर रोगियों की सेवा-चिकित्सा संबंधी पुस्तकों का अध्ययन करती थी।

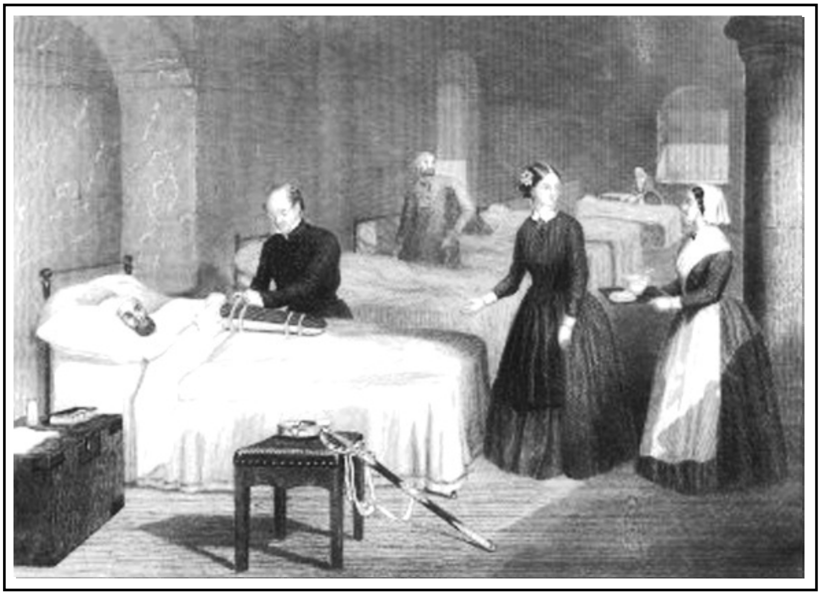

जब एक बार वह फ्रान्स की राजधानी पेरिस गई तब वहाँ उसने एक नर्सिंग होम में तीन महीने की धाय की शिक्षा प्राप्त की थी। घर वापस आई तो वह बेकामयाब होकर उदास बैठी रही।

अन्त में उनकी वैसी दुखी अवस्था को देखकर उसके माता-पिता ने विवश होकर उसे धात्री बनने में स्वीकृति दे दी। इस तरह वह 34 वर्ष की उम्र में धाय बन सकी। वहाँ काम करने में उसका मन नहीं लगा; वक्त का इन्तजार करता रहा। फिर वक्त ने उसके साथ दिया। क्रीमियन युद्‌ध शुरू हुआ। युद्ध में सिपाहियों तथा आम लोगों का घायल होना स्वयं सिद्‌ध ही थी। वह 38 नर्सों के साथ क्रीमिया के लिए प्रस्थान हो गई। वहाँ उसकी ठहरने की व्यवस्था की गई थी। खाने-पीने की व्यवस्था तो अच्छी नहीं थी। फिर भी उसने जी लगा कर घायलों की सेवा की। स्कोटरी के अस्पताल की जहाँ वह काम कर रही थी, अवस्था अच्छी नहीं थी। वहाँ का वातावरण बहुत खराब था। हर दिन कई लोग मौत के घाट उतारते देखे जाते थे। घायलों तथा रोगियों की संख्या अधिक थीं और उनकी सेवा और देखभाल करने वालों की संख्या बहुत कम थी। इसलिए वहाँ बहुत समस्याएँ उठ खड़ी हुईं। इतना होने

पर भी वह हैरान न होकर वह बड़ी लगन के साथ रोगियों की हर सम्भव सेवा की थी। उसी अथक मेहनत को देख कर सभी लोग आश्चर्यचकित हुए थे।

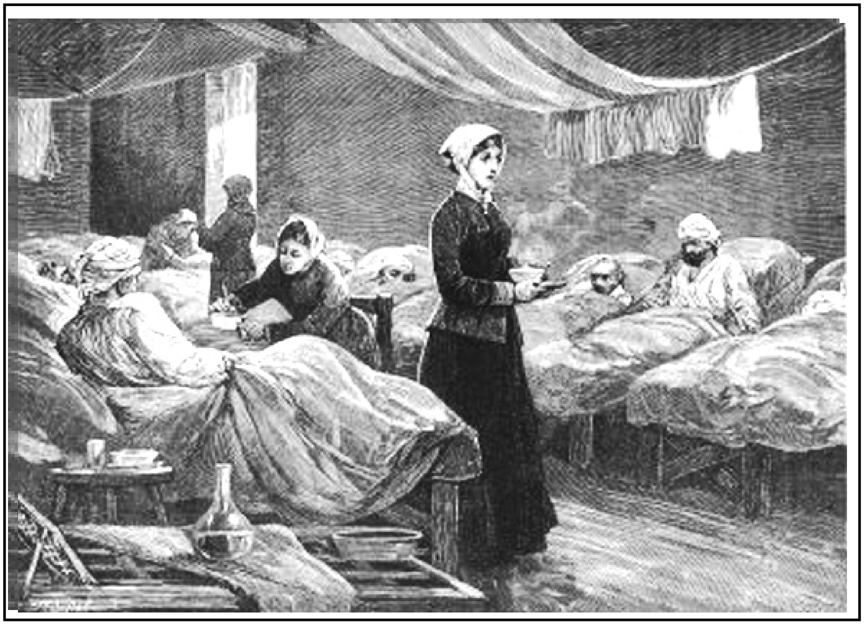

फ्लोरेंस नार्टेंगिल को टाइम्स समाचार पत्र के प्रतिनिधियों की तरफ से एक बड़ी रकम मिली थी जिसे उसने सिपाहियों के भोजन की व्यवस्था में लगा दी। रोगियों तथा घायलों की यथासंभव सुविधाएं समय पर मिलने की कोशिश वह हर समय करती रहती थी। वह अकेली ही वहाँ के असंख्य रोगियों की सेवा करती रही विशेष कर भारतीय सिपाहियों की जो लोग जिनकी अवहेलना करते थे।

बहुत लम्बी समय तक कठिनाइयों का सामना कर लोगों की सेवा करने से उसकी तबीयत खराब हो गई और वह बुरी तरह बीमार पड़ गई। सौभाग्य की बात है, इसी बीच क्रीमिया की लड़ाई भी समाप्त हो गई। लड़ाई समाप्त होने के बाद वह इंग्लैण्ड गई थी। विश्व के कोने-कोने उसकी सेवा का समाचार फैल गया। इंग्लैण्ड की सारी जनता उसे देखने को लालयित थी। इंग्लैण्ड में लोगों ने उसे सम्मान सहित स्वागत किया और जनता ने चन्दा इकट्ठा कर उसे 44000 पौउण्ड भेंट की। इसकी लालच तो उस पर न

थी। उसने इस रकम से लन्दन में एक चिकित्सालय खोला और उसमें योग्य चिकित्सकों तथा धायों को नियुक्त कर अच्छी तरीके से काम कराया। उसने अथक परिश्रम कर सिपाहियों के लिए अच्छे-अच्छे चिकित्सालय बनवाए और घायल सिपाहियों को सुख और सुविधाएँ प्राप्त कराए। रोगियों के लिए भी उसने अलग से चिकित्सालय का निर्माण कराया। उसने चिकित्सकों तथा धात्रियों के लिए उपयोगी पुस्तकें लिखीं। उसने इंग्लैण्ड के डर्बीशायर में रहकर अपने अन्तिम साँस तक रोगियों की खूब सेवा की। इंग्लैण्ड सरकार ने उसके द्‌वारा की गई सेवाओं की स्वीकृति में उसे ‘ अर्डर ऑफ मेरिट’ पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। इसके तीन साल बाद फ्लोरेंस नाइटेंगिल अपने सेवा स्थल को छोड़ कर हमेशा के लिए चली गई। वह मर कर भी जीवित है आज तक।

कठिन शब्दों के अर्थ–

विदुषी	=	विद्‌वान स्त्री।
व्यवस्था	=	प्रबंध, इंतजाम, तरीका, दृढ़ता, विधान।
झुकाव	=	झुकने की क्रिया।
पसन्दगी	=	रुचिकर लगनेवाली, रुचि के अनुकूल।
प्रचलित नहीं थी	=	चलनसार नहीं थी।
चलनसार	=	प्रचलित।
ऊब	=	बेचैनी, विकलता, नीरसता, अरुचि।
वेक़ामयाब	=	असफल।
आम लोग	=	साधारण लोग।
जी लगा कर	=	चित्त में एकाग्र कर।

मौत के घाट उतारना	=	मार डालना।
हैरान	=	चकित, हतबुद्धि, परेशान।
अवहेलना	=	अनादर, तिरस्कार, उपेक्षा, अवज्ञा।
लालायित थी	=	अधीर थी, ललचायी हुई, प्यारी।
रकम	=	रुपया-पैसा, संपत्ति, दौलत।

प्रश्न-अभ्यास

1. फ्लोरेंस नाइटेंगिल का जन्म कब और कहाँ हुआ था ? वह कैसी नारी थी ? वह संसार में क्यों प्रसिद्ध है ?
2. फ्लोरेंस नाइेंगिल के जीवन की चाह क्या थी ? क्या वह अपने जीवन में वही चाह पूरी कर सकी और कैसे ?
3. फ्लोरेंस नाइटेंगिल के वहाँ क्या प्रचलित थी ? उस चलनसार के प्रभाव से हुए दुखों को लिखिए।
4. 'फ्लोरेंस नाइटेंगिल एक सफल धात्री है।''

   इस मत में आपके विचार व्यक्त कीजिए।
5. फ्लोरेंस नाइटेंगिल द्वारा लोगों के लिए किए गए कार्यों का चित्रण कीजिए।
6. फ्लोरेंस नाइटेंगिल की जीवनी संक्षेप में लिखिए।

7. धात्री को अंग्रेजी भाषा में क्या कहा जाता है ? चिकित्सा संबंधी पुस्तक पढ़कर एक धात्री के दायित्व के बारे में दस वाक्य लिखिए।

8. धात्री की नौकरी में आपके विचार व्यक्त कीजिए।

9. क्या आप सहमत है कि धात्री की नौकरी एक प्रकार का समाज-सेवा है ?

* * * * *

पाठ–सात

भारत के राष्ट्रीय अधिचिह्न

– एस. लोकेन्द्र शर्मा

भारत एक विशाल और अनेकविध देश है। इसका विस्तार उत्तर में कश्मीर से दक्षिण में कन्याकुमारी तक तथा पश्चिम में गुजरात से पूर्व में मणिपुर तक है। हमारा भारत 200 वर्ष से अधिक अंग्रेजों के अधीनस्थ था। देशभक्त लोगों के अथक प्रयास और एकत्रित शक्ति के फलस्वरूप सन् 1947 के 15 अगस्त को भारत स्वतंत्र हुआ। यह दिन आज भी स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत का संविधान सन् 1949, 26 नवम्बर को संविधान सभा ने पारित किया। भारत में इसी दिन को संविधान दिवस के नाम से जाना जाता है। इस संविधान के अनुसार भारत एक प्रभुसत्तात्मक लोकतांत्रिक प्रजातंत्र राज्य है। सन् 1950 के 26 जनवरी को भारत में गणतंत्र दिवस मनाकर गणतंत्र के सच्चे स्वरूप का साक्षात्कार किया गया। उसी दिन से आज तक भारत में 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया जा रहा है। समयानुसार हमारे देश के कई अधिचिह्न भी तय करके घोषित किए गए हैं। आगे इन अधिचिह्नों का वृत्तान्त दिया जा रहा है।

राष्ट्रीय संप्रतीक (नेशनल एमब्लेम)

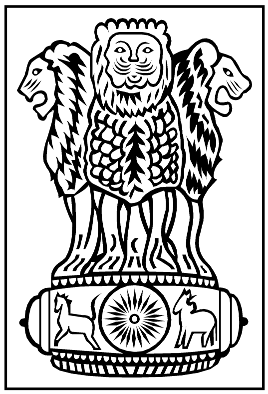

हमारे देश भारत का राष्ट्रीय संप्रतीक महाराज अशोक की राजधानी सारनाथ के संग्रहालय में परिरक्षित रखे हुए सारनाथ के सिंह का अनुकूलन है। यह संप्रतीक सरकार ने भारत के गणतंत्र दिवस सन् 1950 के जनवरी 26 को अपनाया। इसके मौलिक रूप में चार सिंह पीठ पर पीठ होते हुए शीर्ष फलक सवार होते हैं।

तथापि साधारण दृष्टि में तो इसमें केवल तीन सिंह ही नजर आते हैं; चौथा सिंह नजर से छिपा रहता है। शीर्षफलक के ठीक मध्य में एक चक्र है जो न्याय-चक्र का प्रतीक है, इसके दाहिनी बगल में एक वृषभ और बाईं बगल में एक अश्व तथा अन्य चक्रों के खाका अंकित हैं। इसके ठीक नीचे 'मुण्डक उपनिषद' से उद्धृत पद 'सत्यमेव जयते' लिखा हुआ दिखाई देता है। जिस पद का पर्याय है 'सर्वदा सत्य की जीत होती है।'

राष्ट्रीय झण्डा (नेशनल फ्लेग)

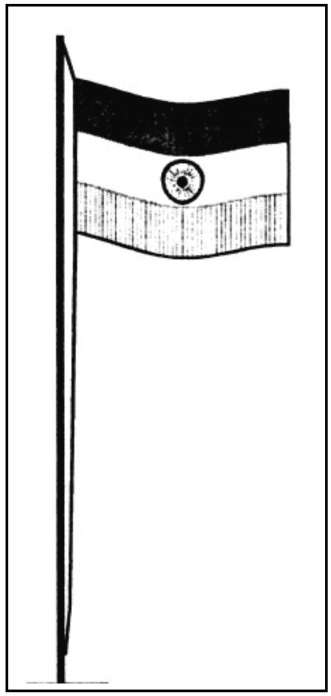

भारतीय संविधान सभा ने भारत राष्ट्र के झण्डे का प्रारूप 22, जुलाई 1947 को अंगीकार किया। साथ ही इस राष्ट्रीय झण्डे का प्रयोग विधि अधिनियम भी पंजीकृत किया है। भारत के झण्डे का आकार क्षितिज के समानान्तर है। इसकी चौड़ाई और लम्बाई का अनुपात 2:3 है। यह झण्डा तिरंगा है जैसे नीचे में गहरा हरा रंग, मध्य में श्वेत रंग तथा ऊपर में केसरी रंग है। सभी रंगत अंश समानुपात में व्यवस्थित हैं। सफेद रंगी की पृष्ठभूमि के ठीक मध्य में चौबीस तीलियोंवाला गहरे नीले रंग का एक चक्र है जो सारनाथ के अशोक महाराज के शीर्षफलक सिंह के च्रक का अनुकूलन है। यह चक्र एक चरखा का श्लेष प्रारूप है।

राष्ट्रीय गान (नेशनल एन्थेम)

भारत की संविधान सभा ने 24 जनवरी, 1950 की कवीन्द्र रवीन्द्र द्वारा लिखित 'जन-गण-मन-अधिनायक जय हे' को भारत के राष्ट्र गान के रूप में अंगीकार किया। यह गान 27 दिसम्बर, 1911 को कलकत्ता में मनाए गए राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में सर्व प्रथम गाया गया। सम्पूर्ण गान पाँच बंदों से बना है परन्तु सरकार ने इसका प्रथम बंद ही राष्ट्रगान के रूप में लिया। इस गान को गाने के अवधि केवल 52 सेकण्ड है। राष्ट्रगान का सम्पूर्ण रूप इस प्रकार है:

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब सिंध-गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जह हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे॥

राष्ट्रीय गीत (नेशनल सोङ)

बंकीमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने संस्कृत भाषा में 'वन्दे मातरम्' की रचना की थी। यह गीत भारत के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के हृदय को बहुत प्रेरित करता था। यह गीत सन् 1896 में हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में सर्वप्रथम गाया गया। यह गीत राष्ट्रगान के समान स्तर पर रखा गया है। इस गीत का प्रथम बंद इस प्रकार है:

वन्दे मातरम
सुजलाम् सुफेलाम्, मलयज शीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम्।
शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनिम्
फूल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनिम्

सुहासिनिम् सुमधुर भाषिनिम्
सुखदां वरदां मातरम् ॥

राष्ट्रीय पशु (नेशनल एनिमल)

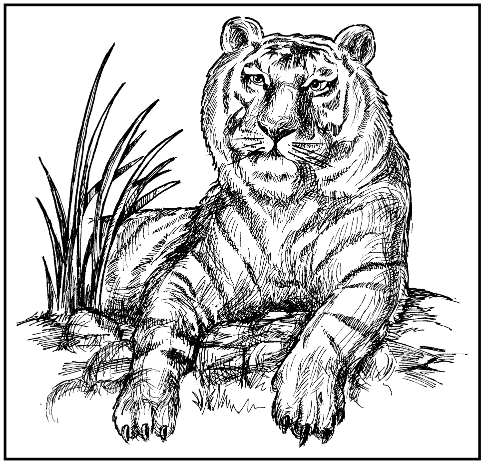

भारतीय बाघ(पेन्थर शेर) भारत का राष्ट्रीय पशु का प्रतीक है। बाघ में निहित लावण्य, बल, दक्षता तथा बृहत सामर्थ्य जैसे सम्मिलित गुणों के कारण इसे सन् 1973 के अप्रैल महीने में भारत के राष्ट्रीय पशु का स्तर मिला। हर वर्ष अप्रैल महीने में भारत सरकार ने ' व्याघ्र परियोजना दिवस' का पालन किया जाता है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य बाघ की आबादी कम होने के कारण खोज कर निकालना और बाघ की आबादी बढ़ाने का काम करना है। इस परियोजना के अन्तर्गत भारत में बाघ के 23 सुरक्षित स्थानों का पता लगाया गया। इन स्थानों की लम्बाई-चौड़ाई कुल मिलाकर 33,126 वर्ग किलो मीटर हैं।

राष्ट्रीय पक्षी (नेशनेल बर्ड)

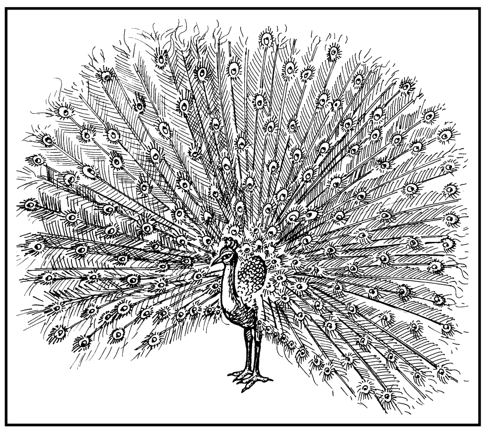

भारत का मयूर भारत के राष्ट्रीय पक्षी का प्रतीक है। भारत में मयूर की संख्या बढ़ाने के लिए भारतीय वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम, 1972 के अनुसार धर्म के नाम पर मयूर के अवसान को रोका गया।

राष्ट्रीय फूल (नेशनल फ्लावर)

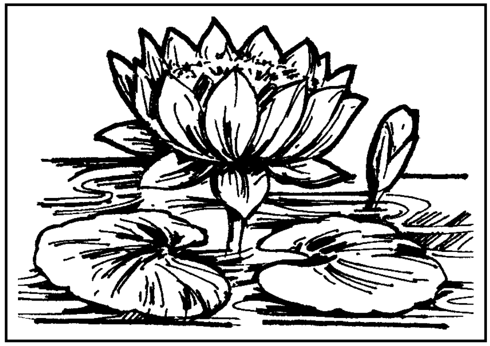

भारत सरकार ने कमल को भारत का राष्ट्रीय फूल घोषित किया। अब कमल भारत के राष्ट्रीय फूल है ।

राष्ट्रीय पंचांग (नेशनल केलेण्डर)

भारत सरकार ने शक-संवत और चैत्र महीने को वर्ष का प्रथम मास माना। गत 22 मार्च 1957 को भारत सरकार ने भारतीय राष्ट्रीय पंचांग का स्तर देकर अपनाया। इस पंचांग में एक वर्ष कुल 365 दिनों से बनता है। इसके साथ सरकार ने कार्यालयों में लागू करने हेतु ग्रिगोरियन पंचांग को भी मान्यता दी है। अगर फरवरी महीने में अधिवर्ष हो तो शक 21 मार्च से शुरू होता है।

कठिन शब्दों के अर्थ–

संप्रतीक = आकृति, रूप, मूर्ति, प्रतिरूप, सिम्बल ।

परिरक्षित = हर तरह से रक्षा किया हुआ।

अनुकूलन = अपने अनुकूल करना।

शीर्षफलक = ढाँचे में बनाया हुआ गणना करना सिखाने का एक उपकरण।

वृषय = साँड़।

अश्व = घोड़ा।

अंगीकार = ग्रहण, स्वीकार।

खाका = ढाँचा

प्रारूप	=	प्रालेख, मसौदा, पूर्वगामी रूप।
पंजीकृत किया है	=	पंजीकरण हुआ है।
अनुपात	=	किसी वस्तु के माप की तुलना से दूसरी वस्तु से रहनेवाला संबंध।
रंगत	=	रंग से युक्त।
व्यवस्थित	=	व्यवस्था से पूर्ण।
श्लेष	=	लगाव, संबंध।
बंदों से	=	छंदों से, श्लोकों से।
संग्राम	=	युद्‌ध, लड़ाई।
प्रेरित करता था	=	प्रेरणा प्राप्त था।
लावण्य	=	सुंदरता, सलोनापन, स्वभाव की उत्तमता।
दक्षता	=	कुशलता, निपुणता।
आबादी	=	जन-संख्या।
अंधा-धुंध	=	बिना सोचे-समझे, बेहिसाब।
अवसान	=	समाप्ति, अन्त, पतन।
अधिवर्ष	=	लीप यिअर।

प्रश्न-अभ्यास

1. भारत में स्वतंत्रता दिवस, संविधान दिवस और गणतंत्र दिवस कब-कब मनाए जाते हैं ? लिखिए।

2. ‘सत्यमेव जयते ’ का अर्थ क्या है ? यह वाक्य कौन-से ग्रंथ से उद्धृत किया गया है ?

3. राष्ट्रीय संप्रतीक और राष्ट्रीय झण्डे के बारे में संक्षेप में लिखिए।

4. भारत के राष्ट्रीय गान का रचयिता कौन था ? इसने राष्ट्रीय गान का स्तर कब पाया ? इसे कंठस्थ कर लिखिए तथा गाने की अवधि भी बताए।

5. भारत के राष्ट्रीय अधिचिह्न कितने है ? उनके नाम क्रमश: लिखिए।

6. पठित पाठ के अनुसार भारत के राष्ट्रीय अधिचिह्नों के बारे में संक्षेप में लिखिए।

7. भारत के राष्ट्रीय झण्डे का एक प्रारूप बनाकर कक्षा में दिखाइए।

8. भारत के राष्ट्रीय गान का अर्थ सरल हिन्दी में लिखिए।

9. भारत के राष्ट्रीय गीत का रचयिता कौन है ? उसकी कौन-सी पुस्तक से यह गीत निकाला गया है ? अपने अध्यापक से जानकारी प्राप्त करके उसकी कृतियों के नाम लिखिए।

10. भारत के राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय पक्षी और राष्ट्रीय फूल के रंगीन चित्र बनाए अथवा इनके चित्र खोज कर कागज में चिपका कर कक्षा में दिखाइए।

* * * * *

पाठ–आठ

मिजोरम का सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन

– बी. रघुमणि शर्मा

मिजोरम भारत के उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित एक राज्य हैं। यहाँ कई जातियाँ निवास करती हैं; उनमें लुसाई, राल्टे और हमार प्रमुख जातियाँ हैं। इन जातियों की कई उपजातियाँ हैं। रोखुम, हाउनार और साइजो लुसाई जाति की उपजातियाँ हैं। राल्टे की उपजातियाँ हैं – काउलनी, सियोकेङ् तथा लेलछुन। किसी समय इन सब के पृथक-पृथक रीति-रिवाज थे; परन्तु साथ-साथ रहने के कारण उनके बीच की दुरियाँ मिट गईं। मिजोरम के निवासियों की मुख्य भाषा मिजो भाषा है। यह भाषा वहाँ की विभिन्न जातियों की सम्पर्क भाषा है।

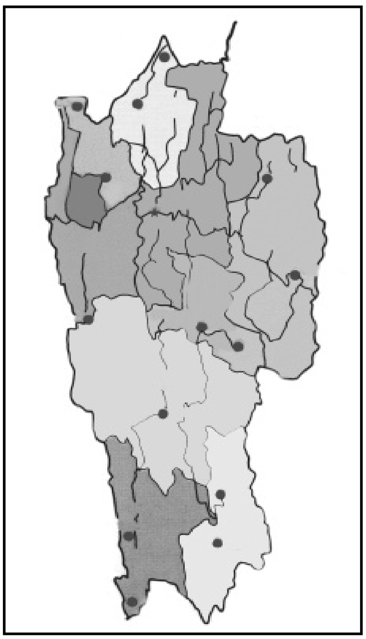

मिजोरम के निवासी पहले भूत-प्रेतों की पूजा किया करते थे। यह प्रथा जन-जातियों में अधिक प्रचलित थी। जन-जातियाँ पेड़-पौधे, पहाड़, पशु-पक्षी, जल, अग्नि, वायु, आदि को भी पूजते थे जो उनके विचार में ये सब मनुष्यों को कष्ट पहुँचाने वाले होते थे। वे यह भी विश्वास करते हैं कि स्त्रियों पर 'खाउरिंग' नामक देवता का विशेष प्रभाव पड़ता है।

मृत लोगों की आत्माओं के संबंध में मिजोवासी ऐसे निवास करते हैं कि ये आत्माएँ 'पियाल-राल' और 'मिट्टी -खुला ' दो प्रकार की होती हैं। पहला प्रकार की पियाल-राल स्वर्ग में रहती है और दूसरी मिट्टी-खुला नरक में। मिजो के समाज में भूत-प्रेत का विश्वास भी रहता है। वे भूत-प्रेत को अच्छे और बुरे दो तरह के मानते हैं। उनके मत में भूत-प्रेत वृक्षों, गुफाओं, चट्टानों, पहाड़ों, खण्डहरों, नदियों की धाराओं, जंगल-झाड़ियों आदि में निवास करते हैं। उनके समाज में 'पाथियन' को सबसे बड़ा और सर्वशक्तिमान देवता माना जाता है। साधारण मानव जीवन में चाहे पुरुष हो या स्त्री, सब पर समान रूप से हानि पहुँचाने वाला था 'हुआई' जो मिजो समाज में दैत्य माना जाता है। मिलो लोग इसकी पूजा विशेष तरीके से करते हैं, बलि चढ़ाते हैं तथा उपासन करते हैं। ओझा अथवा पुरोहित को इसका अच्छा ज्ञान है कि किसी मनुष्य में हुई विपत्ति और दुख-दशा जिस प्रेत के कारण होती है; वह उसकी तृप्ति के लिए पूजा करता है।

लुसाई जाति की स्त्रियों से संबंधित विशेष देवता 'खाउरिंग' है। जब जिस स्त्री पर खाउरिंग का प्रभाव होता है तब वह स्त्री विशेष बोली बोलती है। वह स्त्री जो माँगती है उसे दिया जाता है। इस स्थिति में लोग उससे बहुत डरते हैं और उसका कहना आदर के साथ मानते हैं।

मिजोरमवासी अपने किए पर बहुत विश्वास करते हैं। उनका विश्वास है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में अच्छा कर्म करता है वह मृत्य के बाद स्वर्ग में चला जाता है तथा बुरा कर्म करनेवालों का निवास नरक में होता है।

किसी समय मिजो जातियों और उपजातियों के अलग-अलग रीति-रिवाज होने पर भी एक साथ होने के कारण उनका पारस्परिक संबंध बहुत मजबूत हो गया है। शोक-हर्ष, आमोद-प्रमोद और उत्सवों में भेद-भाव नहीं रखकर एक-दूसरे का भाग लेने लगा। वे सब घुल-मिल कर रह जाने के कारण सब एक जैसा दिखाई देता है। इस प्रकार के सामंजस्यपूर्ण समाज होने से मिजोरम भारतके लिए एक विशेष उदाहरण हो रहा है। किसी पर आए दुख को वे एक साथ मिलकर सामूहिक रूप से दूर करने के लिए कोशिश करते हैं। किसी कारणवश एक व्यक्ति का घर नष्ट हो जाय या उसका भारी नुकसान हो जाय तो उसका घर बनाने और हानि को पूर्ति करने का दायित्व सारा ग्रामीण लोग लेते हैं।

मिजो समाज अन्य भारतीय समाज की तरह पितृ-सत्तात्मक होता है। एक विशेष बात यह है कि यदि माता दूसरी जाति की है तो उसका अधिकार पति के परिवार में आकर केवल सन्तान पैदा करने तक होता है। उस परिवार में उसका कोई हक नहीं होगा। पुरुष अपनी माँ, बहन और बुआ को छोड़कर किसी भी लड़की के साथ

विवाह कर सकता है। अगर पुरुष एक से अधिक विवाह करना चाहता है तो इसमें सामाजिक या धार्मिक कोई पाबन्दी नहीं है। इसमें पहली पत्नी ही हमेशा मुख्य मानी जाती है। युवक-युवतियों के बीच प्रेम-विवाह करना भी यह समाज कोई बाधा नहीं देता। अगर कोई युवक किसी युवती से प्रेम हो गया तो किसी अन्य पुरुष के माध्यम से विवाह का नाता जोड़ा जा सकता हैं। विवाह के लिए खर्च आदि की समस्या हल्के रूप से होता है लेकिन प्रेम-विवाह इससे और कम तथा हल्का होता है। विवाह में नाच-गान और खाना-पीना होते हैं। विवाह की रात में ही वधू अपनी सहेलियों के साथ वर के घर जाती है। मार्ग में उस गाँव के अन्य स्त्री-पुरुष धूल की वर्षा करते हैं। ससुराल में उसका खूब सत्कार होता है। इसके बाद वधू अपने घर वापस जाती है। दूसरे दिन की रात को वधू फिर ससूराल चली जाती है। इसके बाद तो वह अपने घर कभी नहीं जाती। आज कल यह प्रथा थोड़ी-सी बदल गई है।

मिजो समाज में तलाक की प्रथा भी प्रचलित है। लेकिन वह भी किसी नियम के अनुसार करना जरूरी है। तलाक की स्थिति आने पर दोनों पक्षों के लोगों को पहले मन-मुटाव को समाप्त कराने का भरसक प्रयत्न करते हैं। तलाक के लिए स्त्री और पुरुष दोनों का समान अधिकार है, मगर वह भी दोनों पर लागू नियमों के अनुसार होता है। इस समाज में तलाक का मुक़दमा एक सामाजिक कलंक समझा जाता है। अत: तलाक की नौबत कम आती है।

पति की मृत्यु होने पर मिजो समाज में पत्नी तीन महीने तक घर से बाहर नहीं निकल सकती। कितना भी आवश्यक काम क्यों न हो वह घर से बाहर नहीं जाती। तीन महीने के बाद वह घर के बाहर जाकर काम-काज करती है। विधवा का जीवन गुजरना बहुत कठिन होता है क्योंकि उसपर दुराचारिणी होने का व्यर्थ दोषारोपण कर उससे जुर्माना वसुल करने का मौका भी कभी-कभी आता है। ईसाई धर्म के अनुयायी होने से वहाँ की सामाजिक कठिनाइयाँ काफी दूर हो गई हैं। अब सब विचार मानवीय स्तर पर समाधान कर इस समाज को ऊँचा उठाया गया है।

कठिन शब्दों के अर्थ–

पृथक-पृथक	=	अलग-अलग, भिन्न-भिन्न।
दुरियाँ	=	अन्तर, फासले।
प्रथा	=	रीति, नियम।
मृत	=	मरा हुआ।
ओझा	=	भूत-प्रेत आदि का मंत्रोपचार द्वारा असर खत्म करनेवाला व्यक्ति।
पुरोहित	=	धार्मिक कृत्य करनेवाला।
पारस्पीरिक	=	आपसी, आपस का।
सामंजस्य	=	अनुकूलता, औचित्य।
पाबन्दी	=	बन्धन, नियन्त्रण करना, वश में रखना।
नाता	=	परिवारिक संबंध, रिश्ता।
मन-मुटाव	=	मन में दुर्भाव आना, वैमनस्य।
भरसक	=	जहाँ तक संभव हो।
तलाक	=	विवाह का बन्धन तोड़ना।
लागू	=	प्रयुक्त होने के योग्य।
नौबत	=	अवस्था।
अनुयायी	=	अनुशरण करने वाला, अनुचर।

प्रश्न-अभ्यास

1. मिजो लोग किन किन बातों पर विश्वास करते हैं ?
   उन बातों में उनके विचार व्यक्त कीजिए।
2. मृत लोगों की आत्मा के संबंध में मिजो लोगों का क्या विश्वास है ? लिखिए।
3. स्त्री की कौन-सी स्थिति में लुसाई लोग स्त्री से बहुत डरते हैं और क्यों ?
4. मिजो जाति के पारस्परिक संबंधों के बारे में लिखिए।
5. 'मिजो समाज एक सामंजस्यपूर्ण समाज है।'
   इस कथन की पुष्टि उदाहरण के साथ कीजिए।
6. मिजो समाज में प्रचलित विवाह-संबंधी नियमों के बारे में लिखिए।
7. मिजो समाज में तलाक की प्रथा कैसी होती है ? लिखिए।
8. पठित पाठ के आधार पर मिजोराम का सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन संक्षेप में लिखिए।
9. भारत के मानचित्र में मिजोरम कहाँ स्थित है ? भारत का एक मानचित्र खींच कर मिजोरम और इसके पड़ोसी तीन राज्य निर्धारित कीजिए।
10. मिजोरम मणिपुर राज्य की किस तरफ स्थित है ? मणिपुर का कौन-सा जिला इस राज्य का पड़ोसी है ?
11. अपने अध्यापक से पूछकर मिजोराम के बारे में और जानकारी प्राप्त कीजिए।

* * * * *

मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह —

क. संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थानों, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।

ख. स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।

ग. भारत की संप्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे।

घ. देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।

ङ. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्‌ध हों।

च. हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे।

छ. प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं — रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे।

ज. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे।

झ. सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे।

ञ. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।

निर्देश

अध्यापकों को चाहिए कि वे संविधान के भाग ४ क, अनुच्छेद-५१ क में उल्लिखित इन मूल कर्तव्यों को छात्रों को समझाएँ और कण्ठस्थ कराएँ।

राष्ट्रगान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग,
विंध्य-हिमाचल, जमुना-गंगा
उच्छल जलधि-तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।